

Ameer e Ahle Sunnat Ke 113 Inshadat (Hindi)

इस्लाम प्रसार : 338
Weekly Booklet : 338

सौंदर्य, तर्क, अमीरे अहले सुन्नत, यानिचे शिखरे इस्लामी, इकरते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्हाक अलुर कश्दिरी रकबी رحمۃ اللہ علیہ के मुखलिफ़ कलमीन का मन्सूज़

अमीरे अहले सुन्नत के 113 इर्शादात

(किताब : 060)

खण्डात 17



पेशकश :

मजलिसे अल मर्यातुल इल्मिया

(शिखरे इस्लामी)

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत के 113 इर्शादात (किस्त : 6)

दुआए खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत के 113 इर्शादात” पढ़ या सुन ले उसे बुजुर्गाने दीन की महब्वत अता फ़रमा, उन के नक्शे क़दम पर चला और उस के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा ।
 أمين بجاه خاتم النبيين صلى الله عليه وآله وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस ने मुझ पर सुब्हो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।”
 (مَجْمَعُ الزَّوَادِ، 10/163، حديث: 17022)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरआने करीम और अहदीसे करीमा में इल्मे दीन और उलमाए दीन की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलतो अज़मत बयान की गई है, जिस में इस बात की तरफ़ इशारा मिलता है कि हमें भी इल्मे दीन और उलमाए दीन से न सिर्फ़ महब्वतो एहतिराम का मुआमला करना चाहिये बल्कि इन की बातों पर अमल कर के अपनी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी का सामान करना चाहिये, चुनान्चे उलमाए दीन में से दौरे हाज़िर में एक मशहूर नाम अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का भी है, आप के फ़ैजे असर से लाखों मुसलमानों की इस्लाह हुई, इस रिसाले में आप के प्यारे प्यारे फ़रामीन ज़िक्र किये गए हैं,

इन इर्शादात का मुतालआ कर के न सिर्फ़ इन पर अमल कीजिये बल्कि दूसरों तक भी पहुंचाइये, ﷺ इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें हासिल होंगी :

❶ येह तमन्ना करना दुरुस्त नहीं कि मेरे मां बाप मुझे सब बहन भाइयों से ज़ियादा प्यार करें, अलबत्ता येह तमन्ना कर सकते हैं कि मुझे बहुत प्यार करें और इस के लिये उन का हर जाइज़ काम फ़ौरन करे और उन की ख़ूब ख़िदमत करे ।
(4 रमज़ान 1437, 10 जून 2016, बा'दे अस्)

❷ मौक़अ देख कर और इजाज़त ले कर अ़ालिम से मस्अला पूछा जाए, अ़ालिम साहिब मन्अ कर दें तो नाराज़ न हों ।
(7 रमज़ान 1437, 13 जून 2016, बा'दे अस्)

❸ हुब्बे मदह या'नी अपनी ता'रीफ़ चाहने का ज़ब्बा अच्छा नहीं । येह बातिनी बीमारी है और इस की वजह से बन्दा कई गुनाहों में मुब्तला हो सकता है ।
(7 रमज़ान 1437, 13 जून 2016, बा'दे अस्)

❹ छींक आने पर हम्द करनी चाहिये और आवाज़ पस्त (आहिस्ता) करने के लिये मुंह पर रूमाल या टिशू वगैरा रखने में हरज नहीं बल्कि अच्छा है ।
(7 रमज़ान 1437, 13 जून 2016, बा'दे अस्)

❺ अल्लाह पाक ने जैसा बनाया है उस पर राज़ी रहना चाहिये, अलबत्ता हुस्न के लिये सफ़ेद रंग होना ज़रूरी नहीं । (7 रमज़ान 1437, 13 जून 2016, बा'दे अस्)

❻ जो हर एक को अहम्मियत दे, उसे महब्बत दे और उस की हैसियत के मुताबिक़ इज़ज़त दे तो वोह शख्स हर दिल अज़ीज़ (सब का पसन्दीदा) होगा ।
(7 रमज़ान 1437, 13 जून 2016, बा'दे अस्)

❼ बन्दे से गुनाह हो जाए तो डरे कि अल्लाह पाक नाराज़ न हो जाए और नेकी की सआदत पाए तो भी डरे कि न जाने क़बूल हुई है या नहीं ।
(12 रमज़ान 1437, 17 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿8﴾ कोई शख्स हमारी बुराई करे तो उस से नाराज़ होने, किसी के सामने **مَعَادَ اللَّهِ** उस की बुराई करने के बजाए सब्र करें बल्कि उसे तोहफ़ा रवाना कर दें। इस से नफ़रतें दूर और महबूबतें बढ़ेंगी।

(14 रमज़ान 1437, 19 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿9﴾ जवानी में ख़ूब इबादत करनी चाहिये, बुढ़ापे में मेहनत वाली इबादत मुश्किल होती है और जवानी वाली हिम्मत तो ताक़त नहीं होती।

(15 रमज़ान 1437, 20 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿10﴾ मां बाप को सताना आख़िरत के साथ साथ दुनिया में भी नुक़सान का बाइस है।

(15 रमज़ान 1437, 20 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿11﴾ जो सफ़ाई सुथराई सुन्नते तन्जीफ़ (सफ़ाई की सुन्नत) की निय्यत से हो तो कारे सवाब है।

(15 रमज़ान 1437, 20 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿12﴾ वोही अक़्लमन्द काम्याब है जिस ने अपनी अक़्ल को **अल्लाह** पाक और रसूल **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की इताअत में इस्ति'माल किया।

(15 रमज़ान 1437, 20 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿13﴾ **अल्लाह** पाक की किसी ना फ़रमानी को छोटा समझना, उसे बड़ा कर देता है।

(16 रमज़ान 1437, 21 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿14﴾ कोई एहसान करे या हमारा कोई काम कर दे या राहत पहुंचाए तो उस का शुक्रिय्या अदा करने के लिये ज़बान से "शुक्रिय्या" के अल्फ़ाज़ कहे। **جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا** कह दे।

(16 रमज़ान 1437, 22 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿15﴾ मां बाप की फ़रमां बरदारी करना भी उन के एहसानात का शुक्रिय्या अदा करने की एक सूरत है।

(16 रमज़ान 1437, 22 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿16﴾ बैरूने मुल्क का वीजा 100 फ़ीसद सच बोल कर ही हासिल किया जाए । (17 रमज़ान 1437, 22 जून 2016, बा'दे तरावीह्)

﴿17﴾ आशिक़ाने रसूल उ़लमा के ख़िलाफ़ ज़बान दराज़ी (उ़लमा की गुस्ताख़ियां) करने से ईमान ख़तरे में पड़ सकता है ।

(17 रमज़ान 1437, 22 जून 2016, बा'दे तरावीह्)

﴿18﴾ आशिक़ाने रसूल अपनी बच्चियों को पूरी आस्तीन वाले और ज़नाना कपड़े पहनाया करें । (17 रमज़ान 1437, 23 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿19﴾ अल्लाह पाक हमें कोई मन्सब दे तो हमारा मिज़ाज अ़जिज़ी वाला होना चाहिये ताकि हम अपने मा तहूत से भी नरमी से पेश आएँ, जब हम किसी वज्ह से अपने मा तहूत से सख़्त रवय्या इख़्तियार करने लगें तो सोचें कि क्या हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से इस तरह बरताव करते थे ? यूँ हमारे अख़्लाक़ बेहतर हो जाएंगे । اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمِ (19 रमज़ान 1437, 24 जून 2016, बा'दे तरावीह्)

﴿20﴾ हर मन्सब वाला येह ज़ेहन बनाए कि येह मन्सब मुझे अल्लाह पाक ने दिया है और वोह कभी भी मुझ से ले सकता है । इसी तरह अल्लाह पाक की खुफ़या तदबीर से डरता रहे । (19 रमज़ान 1437, 24 जून 2016, बा'दे तरावीह्)

﴿21﴾ जिसे तरह तरह की ने'मतें हासिल हों तो वोह येह सोचे कि मेरी नेकियों का बदला कहीं दुन्या में ही न दे दिया जाए और आख़िरत में मुझे इन से कुछ फ़ाएदा न हो । (19 रमज़ान 1437, 24 जून 2016, बा'दे तरावीह्)

﴿22﴾ हर गुनहगार को अल्लाह पाक की रहमत की उम्मीद रखनी है और हर नेकोकार को अल्लाह पाक की बे नियाज़ी से डरते रहना है ।

(19 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿23﴾ अगर वाक़ेई येह सोच बन जाए कि “अल्लाह देख रहा है” तो गुनाहों से बचने में मदद मिलेगी । (19 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे अ़स्)

﴿24﴾ बच्चे जो कपड़े पसन्द करें उस में कोई मस्अला या शर्ई ख़राबी मसलन जानदारों की तसावीर या मज़बूती के ए’तिबार से क्वोलिटी दुरुस्त न हो तो बच्चों की दिलजूई करते हुए उन की पसन्द को तरजीह दिया करें । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ** इस से उन की दिलजूई का सवाब मिलेगा और वोह लिबास पहनने में बच्चों को भी रज़त होगी । (20 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे तरावीह)

﴿25﴾ बच्चों के दिल में भी ख़ौफ़े खुदा पैदा करना चाहिये ।

(20 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे तरावीह)

﴿26﴾ बा’ज़ बातें मसलन ना बालिग़ का गुनाह लिखा नहीं जाता वग़ैरा बच्चों को नहीं बतानी चाहिए कि इस से बच्चे बेबाक (बे ख़ौफ़) हो जाते हैं और शैतान उन्हें खिलौना बना लेता है । बच्चों के दिल में ख़ौफ़े खुदा होगा तो वोह इबादत करेंगे । (20 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे तरावीह)

﴿27﴾ ऐ काश ! हम मरने से पहले अपने नफ़्स को ज़ेर करने (मारने) में काम्याब हो जाएं । (20 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे तरावीह)

﴿28﴾ मस्जिद इबादत की जगह है, इस में मोबाइल से खेलना महरूमि है ।

(20 रमज़ान 1437, 25 जून 2016, बा’दे तरावीह)

﴿29﴾ गुनाहों की वजह से दिल भी मैला हो जाता है, तिलावते कुरआन करने, मौत को याद करने, अल्लाह पाक के ख़ौफ़ और इश्के मुस्तफ़ा (**صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) में रोने से दिल की सफ़ाई होती है ।

(20 रमज़ान 1437, 26 जून 2016, बा’दे अ़स्)

﴿30﴾ बा वुजू रहने से बलाएं दूर होती हैं ।

(22 रमज़ान 1437, 27 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿31﴾ ड्राइवर हज़रात बा वुजू गाड़ी चलाया करें ।

(22 रमज़ान 1437, 27 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿32﴾ आज कल वुजू का दुरुस्त तरीका कम लोगों को मा'लूम होता है अव्वलन (पहली बात येह कि) फ़राइज़ पूरे अदा नहीं करते और अगर फ़राइज़ पूरे हो जाएं तो सुन्नतें छोड़ देते हैं । हमारा वुजू दुरुस्त होगा तो इस की बरकतें मिलेंगी ।

(22 रमज़ान 1437, 27 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿33﴾ मैं ने अपनी बेटी को मुबालग़तन 100 मरतबा कहा होगा कि अपने सास सुसर की ख़िदमत, वालिदैन समझ कर करो । इसी तरह अपनी नवासियों को भी कहता रहता हूँ कि अपने दादा दादी की ख़ूब ख़िदमत किया करो ।

(22 रमज़ान 1437, 27 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿34﴾ बुजुर्गों की ख़िदमत ज़रूर रंग लाती है ।

(23 रमज़ान 1437, 28 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿35﴾ अल्लाह पाक की रिज़ा सब से बड़ी ने'मत है, अल्लाह पाक जिस से राज़ी होगा उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।

(23 रमज़ान 1437, 29 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿36﴾ नेकियों पर इस्तिक़ामत हासिल करने का तरीका येह है कि अल्लाह पाक से इस्तिक़ामत की दुआ़ करे, नेकियों में दिल न भी लगे तो लगाने की कोशिश करे, **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ الْكَرِيْمُ** दिल लग ही जाएगा । नेकियों के फ़ज़ाइल पढ़ता रहे ।

(24 रमज़ान 1437, 29 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿37﴾ बच्चे की सालगिरह (Birth Day) पर कुरआन ख़्वानी या महफ़िले ना'त की तरकीब बनाई जाए। म्यूज़ीकल मर्दों औरतों के इख़्तिलात (Mix) होने, तालियां बजाने से मुकम्मल बचा जाए। सिर्फ़ वोही काम किया जाए जो अल्लाह पाक की रिज़ा का बाइस हो। (26 रमज़ान 1437, 1 जूलाई 2016, बा'दे तरावीह)

﴿38﴾ जो हज़ या उम्रे के लिये जा रहा हो उसे मुबारक बाद दी जाए और येह कहा जाए कि अल्लाह पाक आप की हाज़िरी क़बूल फ़रमाए, बे अदबों और बे अदबी से बचाए, मेरे लिये दुआ कीजियेगा, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में मेरा सलाम, शैख़ैने करीमैन (हज़रते अबू बक्र और हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا) को सलाम, अहले बक़ीअ व अहले मताफ़ को सलाम अर्ज़ कीजियेगा वग़ैरा। (21 रमज़ान 1437, 26 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿39﴾ जिस का वज़न कम करने का पक्का ज़ेहन बन गया हो वोह पहले लिपिड प्रोफ़ाइल, कोलेस्ट्रॉल और शूगर टेस्ट करवाए फिर ब तदरीज आहिस्ता आहिस्ता हर माह वज़न कम करे।

(16 रमज़ानुल मुबारक 1436, 3 जूलाई 2015, बा'दे तरावीह)

﴿40﴾ जवानी में मिठास, चिक्नाहट वग़ैरा से परहेज़ करें, बुढ़ापा अच्छा गुज़रेगा और बुढ़ापे में इन चीज़ों से बचना बहुत ज़रूरी है।

(4 ज़िल हिज्जा 1436, 18 सितम्बर 2015)

﴿41﴾ पान गुटके खाने की आदत गोया रक़म ख़र्च कर के बीमारी त़लब करना है।

(7 ज़िल हिज्जा 1436, 21 सितम्बर 2015)

﴿42﴾ मोटापे का बेहतरीन इलाज वरज़िश और ज़ियादा खाने से परहेज़ करना है।

(5 मुह्रम 1437, 19 अक्टूबर 2015)

﴿43﴾ डॉक्टर से “दवा” मिल सकती है शिफ़ा नहीं, **अल्लाह** पाक चाहेगा तो ही दवा शिफ़ा का ज़रीआ बनेगी। (15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿44﴾ “बीमार” रब्बुल इज़्ज़त (**अल्लाह** पाक) की रहमत के साए में होता है। (15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿45﴾ इलाज के लिये दवा के साथ साथ दुआ भी करते रहिये।

(15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿46﴾ इलाज अपनी मरज़ी से करने के बजाए डॉक्टर के मश्वरे से करना चाहिये। (15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿47﴾ किसी हकीम, बाबा जी, डॉक्टर या अस्पताल के इलाज से फ़ाएदा न हो या तक्लीफ़ बढ़ जाए तो सब्र कीजिये, बिग़ैर सहीह ज़रूरत के किसी का नाम ले कर दूसरों को बताना कारे सवाब नहीं बल्कि इस में ग़ीबतों और दिल आज़ारियों वग़ैरा गुनाहों में जा पड़ने का ख़तरा है।

(15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿48﴾ जिस्मानी बीमारियों से गुनाहों की बीमारियां ज़ियादा ख़तरनाक हैं।

(15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿49﴾ कोई बीमारी “ला इलाज” नहीं, हां ! बहुत सारे अमराज़ की दवा डॉक्टर अब तक दरयाफ़्त नहीं कर सके। (15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿50﴾ “नज़र” डॉक्टर पर नहीं “**अल्लाह** करीम की रहमत” पर रखिये, डॉक्टर लाख अच्छा इलाज करे मगर **अल्लाह** पाक चाहेगा तो ही सिह्हत हासिल होगी। (15 जुमादल उख़्रा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿51﴾ हत्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इलाज करवाना मुनासिब है कि वोह आप की तबीअत से वाकिफ़ रहेगा, डॉक्टर बदलते रहेगे तो हर डॉक्टर नए

सिरे से इलाज शुरू करेगा और हो सकता है आप आज्माइश में पड़ते रहें।

(15 जुमादल उख़ा 1444, 7 जनवरी 2023)

﴿52﴾ पाउं के तल्वों में किसी भी तेल से मालिश करने से उस की जिल्द नर्म रहेगी, फटने से महफूज़ रहेगी और दिमागी सलाहिय्यत में भी इज़ाफ़ा होगा, क्यूं कि तल्वों का तअल्लुक़ दिमाग़ से है।

(8 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437, 21 नवम्बर 2015)

﴿53﴾ रोज़ाना 12 गिलास पानी पीना अपना मा'मूल बना लीजिये, कब्ज़ नहीं होगी और जिल्द भी नर्म रहेगी। सर्दियों में पानी कम पिया जाता है, जिस से येह दोनों तकालीफ़ बढ़ जाती हैं।

(8 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437, 21 नवम्बर 2015)

﴿54﴾ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बरकत वाला महीना है, इस में बड़े बड़े औलियाए किराम के आ'रास हैं।

(15 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437, 28 नवम्बर 2015)

﴿55﴾ ग़ालिब अक्सरिय्यत डट कर खाती है, डट कर खाने से दिल सख़्त होता है।

(4 रबीउल आख़िर 1437, 14 जनवरी 2016)

﴿56﴾ चीनी (Sugar) मीठा ज़हर है। (18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿57﴾ इबादत पर कुव्वत हासिल करने के लिये कम खाइये।

(18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿58﴾ गुड़ की चाय अच्छी होती है। मैं गुड़ की चाय इस्ति'माल करता हूँ।

(18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿59﴾ सिद्दहत मन्द को 92 दिन में एक मरतबा खून का टेस्ट (LIPID PROFILE) करवाना चाहिये। (18 जुमादल ऊला 1437, 27 फ़रवरी 2016)

﴿60﴾ गर्म खाना प्लास्टिक की थेलियों में डालने से इज्तिनाब करना चाहिये ।
(24 जुमादल उख़्बा 1437, 12 एप्रिल 2016)

﴿61﴾ डॉक्टर व हकीम को खुदातर्स (रहूम दिल) और मरीजों का हमदर्द होना चाहिये ।
(8 रजब 1437, 16 एप्रिल 2016)

﴿62﴾ अवरादो वजाइफ़ में हर मरज़ का इलाज है । (8 रजब 1437, 16 एप्रिल 2016)

﴿63﴾ जवानी से ही खाने पीने में परहेज़ शुरू कर दें ताकि बुढ़ापे में कम तकलीफ़ हो ।
(29 रजब 1437, 7 मई 2016)

﴿64﴾ कबाब समोसे खाने से बचने में ही आफ़ियत है ।
(29 रजब 1437, 7 मई 2016)

﴿65﴾ 80 फ़ीसद अमराज़ डट कर खाने से होते हैं ।
(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अस्)

﴿66﴾ सिगरेट नोशी बहुत नुक़सान देह है । इस से टीबी हो सकती है, सिगरेट पीने वालों को बुढ़ापे में बहुत परेशानी का सामना होता है । सिगरेट के क़रीब भी नहीं जाना चाहिये ।
(4 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿67﴾ ज़ख़्म, बीमारी, घबराहट, नींद उचट जाना (नींद न आना), तंगदस्ती और हर तरह के जानी या माली नुक़सानों और परेशानियों पर सब्र करते हुए बिला वजह दूसरों पर ज़ाहिर करने से बच कर मग़िफ़रत की बिशारत के हक़दार बनिये ।
(5 रमज़ान 1437, 11 जून 2016, बा'दे अस्)

﴿68﴾ खाना खाने के फ़ौरन बा'द पानी पीना तिब्बन (Medically) नुक़सान देह है, बिल खुसूस खाना खाने के बा'द जो कोल्ड्रिंक (Cold Drink) का रवाज है, येह इन्तिहाई नुक़सान देह है ।

(6 रमज़ान 1437, 11 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿69﴾ गर्मियों में दो मशरूब कच्ची लस्सी और लीमूं की सिकन्ज्बीन फ़ाएदे मन्द हैं ।
(6 रमज़ान 1437, 11 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿70﴾ वरज़िश बहुत सारी बीमारियों से बचने का ज़रीआ है ।

(17 रमज़ान 1437, 23 जून 2016, बा'दे अस्)

﴿71﴾ जोड़ों के दर्द का इलाज : एक अ़दद भिन्डी सर से ले कर दुम तक बीच में से चीरा लगा लें और उस को कम अज़ कम 12 घन्टे पानी में भिगो कर रखें फिर उसी पानी में उस को निचोड़ कर उस का पानी पी लें, जोड़ों के दर्द से नजात मिलेगी । اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيمُ (21 रमज़ान 1437, 26 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿72﴾ जुल्फें रखना सुन्नत है, बच्चों को भी जुल्फें रखनी चाहिएं, मगर मेरा मश्वरा है कि वोह सिर्फ़ आधे कान तक रखा करें, पूरे कान या कन्धों तक न रखें ।
(21 रमज़ान 1437, 27 जून 2016, बा'दे अस्)

﴿73﴾ दरख़्त इन्सान की सिह्हत के लिये मुफ़ीद हैं, दरख़्त इन्सान के ख़ादिम हैं । घर के इर्द गिर्द दरख़्त होना फ़ाएदे का बाइस है ।

(30 ज़ी का'दतिल हराम 1437, 2 सितम्बर 2016)

﴿74﴾ जब सूरज तुलूअ़ या गुरूब हो तो 20/25 मिनट की धूप छोटे बड़े सब के लिये फ़ाएदे मन्द है । (29 जुल हिज्जतिल हराम 1437, 2 अक्टूबर 2016)

﴿75﴾ गाजर के मौसिम में रोज़ाना एक गाजर खाने से बीनाई तेज़ होती है ।
(1 मुहर्रमुल हराम 1438, 3 अक्टूबर 2016)

﴿76﴾ कहा जाता है : फलों में सब से ज़ियादा तुवानाई बख़्श सेब है ।

(1 मुहर्रमुल हराम 1438, 3 अक्टूबर 2016)

﴿77﴾ नहार मुंह लहसन की पोथी (गांठ) की एक दो फांक (जवा) खाने से कोलेस्ट्रॉल कम होता और दांत का दर्द दूर होता है ।

(2 मुहर्रमुल हराम 1438, 4 अक्टूबर 2016)

﴿78﴾ कच्चा लहसन खाने से मुंह में बदबू हो जाए तो अज्वाइन चबाने से मुंह की बदबू दूर हो जाती है । (2 मुहर्रमुल हराम 1438, 4 अक्टूबर 2016)

﴿79﴾ अदरक को छीलने की ज़रूरत नहीं, छिलके समेत इस्ति'माल किया करें । (यकुम रबीउल अव्वल 1438, 30 नवम्बर 2016)

﴿80﴾ खा कर पछताने से न खा कर पछताना अच्छा है ।

(3 रबीउल अव्वल 1438, 2 दिसम्बर 2016)

﴿81﴾ रोज़ाना 7 इन्जीर खाने से कमर का दर्द दूर होता है ।

(6 रबीउल अव्वल 1438, 5 दिसम्बर 2016)

﴿82﴾ प्लास्टिक की थेलियों और बरतन में गर्म खाने की चीज़ न डाला करें, इस तरह खाने में केमीकल मिल जाते होंगे और सिद्दहत को नुक़सान पहुंचता है । (यकुम जुमादल ऊला 1438, 29 जनवरी 2017)

﴿83﴾ मछली कोएले पर पकाना मुफ़ीद है, इस का सालन भी सिद्दहत के लिये अच्छा है, तलने से इस के फ़वाइद में कमी हो जाती है ।

(1 जुमादल ऊला 1438, 29 जनवरी 2017)

﴿84﴾ तिब्बी तहक्कीक़ है कि कम खाने वाले लम्बी उम्र पाते हैं ।

(01 रमज़ान 1437, 6 जून 2016, रात)

﴿85﴾ खीरा छिलके समेत खाया जाए, इस का छिलका भी सिद्दहत के लिये मुफ़ीद है । (2 जुल हिज्जतिल हराम 1437, 4 सितम्बर 2016)

﴿86﴾ अपनी मस्जिदे महल्ला की नमाजे इशा की जमाअत के वक़्त से 2 घन्टे के अन्दर अन्दर घर जा कर सो जाया करें ।

(9 जुमादल उख़ा 1437, 19 मार्च 2016)

﴿87﴾ जब भी वुजू करने लगे तो दिल में वुजू करने की निय्यत हाज़िर करते हुए कहा करें : मैं हुक्मे इलाही बजा लाते हुए वुजू करूंगा ।

(16 जुमादल उख़ा 1437, 26 मार्च 2016)

﴿88﴾ सोशल मीडिया (Social Media) से कनारा कश (दूर) रहें, इस से बहुत वक़्त जाएअ होता है । गुनाहों में पड़ने का क़वी अन्देशा (ख़तरा) है ।

(16 जुमादल उख़ा 1437, 26 मार्च 2016)

﴿89﴾ शौहर को खुश करना, अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये हो तो इबादत है ।

(15 रजब 1437, 23 एप्रिल 2016)

﴿90﴾ घरेलू मसाइल का एक हल यह है कि फ़रीक़ैन (दोनों) में से एक सब्र करे ।

(15 रजब 1437, 23 एप्रिल 2016)

﴿91﴾ गुस्से की वजह से इन्सान कई गुनाहों में जा पड़ता है, इस लिये गुस्से का इलाज ज़रूरी है । इस के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले “गुस्से का इलाज” का मुतालाआ कीजिये ।

(13 शा'बान 1437, 21 मई 2016)

﴿92﴾ बड़ी उम्र के लोगों को चाहिये कि अपने अमराज़ का ज़िक्र भी बिला ज़रूरत न किया करें ।

(13 शा'बान 1437, 21 मई 2016)

﴿93﴾ दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में सुन्नतों भरा ए'तिकाफ़ करना नेक बनने का बेहतरीन ज़रीआ है ।

(13 शा'बान 1437, 21 मई 2016)

﴿94﴾ मुझे अरबों से महबबत है, क्यूं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अरबी थे ।

(20 शा'बान 1437, 28 मई 2016)

﴿95﴾ बा वुजू रहने से चेहरे की खूब सूरती में इज़ाफ़ा होता है, **अल्लाह** पाक हमें नेकियों का नूर अता करे । (26 रमज़ान 1437, 1 जूलाई 2016, बा'दे तरावीह)

﴿96﴾ अइम्मए किराम दुआए सानी क़दरे धीमी आवाज़ में किया करें, क्यूं कि कई लोग नमाज़ पढ़ रहे होते हैं । (27 शा'बान 1437, 4 जून 2016)

﴿97﴾ जब नेकियां कमाने का ज़ेहन बन जाए और जज़्बा मिले तो फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल भी अदा करना आसान हो जाता है ।

(27 शा'बान 1437, 4 जून 2016)

﴿98﴾ नफ़्स को काबू करने का तरीक़ा येह है कि नफ़्स जो कहे उस की मुख़ालफ़त की जाए । (01 रमज़ान 1437, 6 जून 2016, रात)

﴿99﴾ अपने ज़िम्मे इतना काम लेना चाहिये जो हम कर सकें और शरमिन्दगी न हो । (23 रमज़ान 1437, 28 जून 2016, बा'दे तरावीह)

﴿100﴾ तसव्वुफ़ की कोई किताब ऐसी नहीं जिस में भूक के फ़ज़ाइल न हों । (01 रमज़ान 1437, 6 जून 2016, रात)

﴿101﴾ **अल्लाह** पाक हमें ऐसी सिहह़त दे जिस से इबादत पर कुव्वत हासिल हो । (01 रमज़ान 1437, 6 जून 2016, रात)

﴿102﴾ माहे रमज़ान में मुकम्मल कुरआने करीम की तिलावत कीजिये । रोज़ाना तिलावते कुरआन के लिये कम अज़ कम एक घन्टा मख़सूस कर लें । (01 रमज़ान 1437, 7 जून 2016, बा'दे अ़स्)

﴿103﴾ तसव्वुफ़ की कोई किताब ख़ामोशी के फ़ज़ाइल से ख़ाली नहीं ।

(01 रमज़ान 1437, 7 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«104» परेशान नज़री (बिगैर ज़रूरत इधर उधर देखते रहना) अच्छी बात नहीं, बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों से इस से बचना कारे सवाब है ।

(01 रमज़ान 1437, 7 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«105» ईद पर नए कपड़े पहनना ज़रूरी नहीं, सुन्नत के मुताबिक़ सिले हुए पुराने धुले हुए कपड़े भी पहने जा सकते हैं ।

(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«106» आज कल बच्चों से शफ़क़त भरा प्यार करने का रुज़्हान कम है, येह अच्छी बात नहीं ।

(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«107» सुन्नत और सवाब समझते हुए छोटे बच्चों को शफ़क़त भरा प्यार करना चाहिये ।

(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«108» **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ !** मुझे फ़ितरी तौर पर बच्चों से प्यार है ।

(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«109» मुसल्मान का लम्हा लम्हा कीमती है, इसे ज़ाएअ होने से बचाइये ।

(3 रमज़ान 1437, 9 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«110» हकीकी मालदार वोह है जो साहिबे हुस्ने आ'माल (नेकियां करने वाला) है ।

(8 रमज़ान 1437, 14 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«111» बच्चों को आसान आसान अहादीस और नेक लोगों के वाक्फ़ात सुना कर नेकी का ज़ब्बा दिया जाए । (9 रमज़ान 1437, 15 जून 2016, बा'दे अ़स्)

«112» अगर जानवर किसी तकलीफ़ में हो तो उस की तकलीफ़ दूर करना सवाब का काम है ।

(10 रमज़ान 1437, 15 जून 2016, बा'दे तरावीह)

«113» हर गुनाह छोटा हो या बड़ा, जहन्नम में झोंक (डाल) सकता है ।

(16 रमज़ान 1437, 21 जून 2016, बा'दे तरावीह)

अगले हफ्ते का रिसाला

